प्रथम श्रुतस्कन्ध में निम्नलिखित 16 अध्ययन हैं:-
(1) समय (2) वैयालिय (3) उपसर्ग (4) स्त्री परिज्ञा (5) नरक विभक्ति (6) वीरस्तव (7) कुशल (8) वीर (पराक्रम) (9) धर्म, (10) समाधि (11) मार्ग (12) समवसरण (13) यथा तथ्य (14) ग्रन्थ अर्थात् परिग्रह (15) आदान (16) गाथा। इसमें मुख्य रूप से स्व-समय, पर-समय का विस्तृत वर्णन किया गया है। साथ ही इसमें नियतिवाद, सांख्यमत, न्याय वैशेषिक, अज्ञानवाद, कर्म-चयनवाद, जगत्-कर्तृत्व, त्रैराशिक आदि मतों की समीक्षा की गई है। इसके अतिरिक्त इसमें महाव्रतों, अणुव्रतों, उपसर्ग-परिज्ञा, स्त्री परिज्ञा, नरक-यातनाओं, पराक्रम-स्वरूप, लौकोत्तर धर्म, समाधि, संयम, सदाचार, समवसरण एवम् ब्राह्मण, श्रमण, भिक्षु और निर्ग्रन्थ का स्वरूप बतलाया गया है।

द्वितीय श्रुतस्कंध में सात अध्ययन हैं, जो इस प्रकार हैं:-
(1) पुण्डरीक (2) क्रिया स्थान (3) आहार परिज्ञा (4) प्रात्याख्यान क्रिया (5) आचार श्रुत (अनगार श्रुत) (6) आर्द्रकीय और (7) नालंदीय। इनमें अंतिम अध्ययन नालंदीय में नालंदा से संबंधित घटनाओं का वर्णन किया गया है। इसलिए इसका नाम नालंदीय पड़ा है। इसमें मुख्य रूप से 23 वें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ का चातुर्याम और 24 वें तीर्थंकर भगवान् महावीर के पंच महाव्रत धर्म का निरूपण किया गया है।

Scanned by CamScanner

3. स्थानांगसूत्र : (ठाणांग)

तीसरा अंग आगम साहित्य का नाम स्थानांग सूत्र है। इस श्रुतांग में 10 (दस) अध्ययन हैं, जो 783 (सात सौ तिरासी) सूत्रों से युक्त है।

प्रथम अध्ययन में एक दर्शन, एक-चरित्र, एक समय, एक प्रदेश, एक परमाणु, एक आत्मा का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्ययन में जीव की दो क्रियाएँ, श्रुतज्ञान के दो भेद, जीव के सम्यकत्व तथा मिथ्यात्व वादी क्रिया के भेद बतलाये गये हैं।

तृतीय अध्ययन : इसमें तीन वेद, तीन पुरुषार्थ तथा पुरुषार्थ के भेद बतलाए गये हैं।

चतुर्थ अध्ययन : इस ग्रन्थ के चतुर्थ अध्ययन में ऋषभ और महावीर को छोड़कर शेष 22 तीर्थंकरों के चातुर्याम धर्म का वर्णन किया गया है।

पांचवे अध्ययन : इसमें पंचमहाव्रत, पांच राजचिन्ह, जाति, कुल, कर्म, शिल्प और लिंग के भेद से पांच प्रकार की आजीविका -ओं का प्ररूपण किया गया है।

छठे अध्ययन : इसमें छः आर्य जातियों तथा कोरव नामक छः आर्य कुलों का निरूपण किया गया है।

सातवें अध्ययन : इसमें सात -कासव, गौतम, वच्छ, कोच्य, कोसिय, मंडव और वासिट्ठ -इन गोत्रों का उल्लेख किया गया है।

आठवें अध्ययन : इसमें आठ क्रियावादी एवं आठ प्रकार के आयुर्वेद का उल्लेख किया गया है।

नवें अध्ययन : इसमें महावीर के नौ गुणों एवम् नवनिधियों का निर्देश किया गया है।

दसवें अध्ययन : इसके अंतिम 10वें अध्ययन में चम्पा, मथुरा, वाराणसी, साकेत, हस्तिनापुर, कांपिल्य, मिथिला, कोसाम्बी और राजगृह नामक दस राजधानियों का वर्णन किया गया है। इस प्रकार, इस ग्रन्थ का भौगोलिक दृष्टि से अधिक महत्व है।

Scanned by CamScanner

4. समवायांग सूत्र:

समवायांग सूत्र में 275 सूत्र हैं। स्थानाङ्ग के समान इसमें भी एकादि क्रम से संख्या विषयक वस्तुओं का निरूपण करते हुए 178 वें सूत्र में 100 तक संख्या पहुँच गयी हैं।

इसमें एक संख्या में आत्मा, दो में जीव और अजीव, तीन में तीनगुप्ति, चार में चार कषाय, पांच में पंचमहाव्रत, छः में षट्काय जीव, सात में सात समुद्घात, आठ में आठ मद, नौ में प्रथम श्रुत स्कंध के नौ अध्ययन, दस प्रकार के श्रमण धर्म, ग्यारह प्रतिमाएँ, बारह भिक्षु प्रतिमा, त्रियोदश क्रिया स्थान, चौदह गुण स्थान, पन्द्रह योग, सत्रह प्रकार के असंयम, अठारह - लिपियों आदि का निर्देश किया गया हैं।

साथ ही इसमें भगवान् महावीर, नेमिनाथ, पार्श्व, मल्ली और वासुपूज्य को छोड़कर उन्नीस तीर्थंकरों को गृहस्थ प्रवर्जित कहा गया हैं।

इसमें कुलकर, तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वसुदेव और प्रतिवासुदेव के माता-पिता, जन्मस्थान, दीक्षास्थान आदि का वर्णन किया गया हैं।

इसमें गणित, रूप, नाट्य, गीत, वाद्य आदि 72 कलाओं के नाम निर्दिष्ट हैं। इसकी अधिकांश रचना गद्य रूप में हैं। साहित्यिक ग्रन्थ न होने पर भी अलंकार और कल्पना की दृष्टि से यह रचना महत्वपूर्ण हैं।

Scanned by CamScanner